साधकों का मासिक प्रेरणा

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2554, स्रावण पूर्णिमा, 24 अगस्त, 2010 वर्ष 40 अंक 2

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

यो हवे दहरो भिक्खु, युञ्जति बुद्धसासने।
सोमं लोकं पभासेति, अब्भा मुत्तोव चन्दिमा॥

– धम्मपद- ३८२

जो कोई तरुण साधक भी बुद्ध के शासन में लग जाता है, वह (अर्हत्व-प्राप्ति के मार्ग के ज्ञान से) मेघमुक्त चंद्रमा के समान इस (खंधादिभेद) लोक को प्रकाशित करता है।

औरों के हित-सुख हेतु विचरण करो!

भगवान ने आषाढ़ पूर्णिमा के दिन अपने पांचों ब्राह्मण साथियों को मुक्ति का मार्ग सिखाया जिस पर चलते हुए वे पांचों अरहंत हुए। एक महीना बीतते-बीतते वणिकपुत्र यशोज के साथ चौवन अन्य वणिजपुत्रों को भी धर्म सिखाया, जिससे वे भी धर्म प्राप्त कर मुक्त हुए। तब संसार में बुद्ध सहित कुल ६१ अरहंत भिक्षु हुए।

जो व्यक्ति भिक्षुसंघ में सम्मिलित होता है उसका जन्म चाहे जिस कुल या वर्ण में हुआ हो, वह वैसे ही अलग नहीं रह सकता जैसे कि भिन्न-भिन्न नदियों का पानी समुद्र में जाकर एकरस एकाकार हो जाता है और कहा नहीं जा सकता कि कौन-सा पानी किस नदी का है! वैसे ही संघ में सम्मिलित होने पर यह कहा नहीं जा सकता कि इसके पूर्व वह ब्राह्मण वर्ण का था या वैश्य वर्ण का। भिक्षु भिक्षु है चाहे वह इस वर्ण से आया हो या उस वर्ण से। भिक्षुसंघ में सम्मिलित होने पर ऐसा नहीं कहा जाता। लेकिन आज के भारत में कुछ एक ब्राह्मण और बनिये अपने आपको ऊंची जाति वाला मान कर बुद्ध की जाति-विरोधी सार्वजनीन शिक्षा का विरोध करते हैं। यह उनकी जानकारी के लिए है कि बुद्ध ने न केवल अपना प्रथम उपदेश इन दो जातियों के लोगों को ही दिया, बल्कि पहले पहल धर्म प्रसारण का काम भी इन्हें ही सौंपा।

भगवान ने उन साठ भिक्षुओं को एकत्र करके कहा कि तुम सब पुनर्जन्म के बंधनों से सर्वथा मुक्त हो चुके हो। अधोगति में जन्म होने का तो प्रश्न ही नहीं, तुम मानव, देव एवं ब्रह्मलोकों के बंधनों से मुक्त हो गये हो। अब किसी लोक में भी तुम्हारा जन्म संभव नहीं है। यानी तुम्हारा भवसंसरण समाप्त हो चुका है। यह मुक्ति जो तुम्हें प्राप्त हुई है वह केवल तुम्हारे तक सीमित न रहे। अब तुम बहुतों के हित-सुख के लिए, लोगों पर अनुकंपा करते हुए, देव-मनुष्यों के हर्ष और हित-सुख के लिए यह विद्या बांटते हुए विचरण करो। उन साठ अरहंतों के लिए धर्मचारिका का यह मंगलदायी प्रथम उपदेश था। भगवान चाहते थे कि दो अरहंत एक साथ नहीं जायँ। सब अलग-अलग मार्ग से धर्मप्रसार में लगें ताकि अधिक से अधिक लोग उनके संपर्क में आयें और अपना हित-सुख साध लें।

लोगों को क्या और कैसे सिखायेंगे, यह भी स्पष्ट किया। भलीभांति अर्थपूर्वक व्यंजित करके, ब्रह्मचरण (धर्माचरण) का प्रकाशन करें। यह धर्म नितांत परिशुद्ध है, नितांत परिपूर्ण है। परिशुद्ध इस माने में कि अशुद्ध मान कर इसमें से कुछ निकालने की गुंजाइश नहीं है। परिपूर्ण इस माने में कि कोई कमी देख कर इसमें कुछ और जोड़ने की आवश्यकता नहीं है। यह धर्म आदि में कल्याणकारी है, यानी, शीलपालन में कल्याणकारी है; मध्य में कल्याणकारी है, यानी, समाधि में कल्याणकारी है और अंत में कल्याणकारी है, यानी, प्रज्ञा में कल्याणकारी है। इसीलिए शील, समाधि, प्रज्ञा के इस आर्य अष्टांगिक मार्ग को **केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं...** कहा।

कोई व्यक्ति जब सम्यक संबुद्ध बनता है, उस समय अनेक पूर्ण पारमी-संपन्न लोग जन्म लेते हैं। तभी कहा, समाज में ऐसे मनुष्य विद्यमान हैं जो तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। यदि उन्हें सद्धर्म (सत्य-धर्म) न दिया गया तो उनकी हानि होगी और यदि इसे प्राप्त कर लेंगे तब इसके अभ्यास द्वारा निश्चितरूप से उनका कल्याण होगा। वे भी भवसंसरण से मुक्त हो जायेंगे।

इस प्रकार अपने साठ अरहंत शिष्यों को भिन्न-भिन्न स्थानों पर धर्मचारिका के लिए भेजा और स्वयं उरुवेला के सेनानी निगम की ओर प्रस्थान किया ताकि वहां के लोगों को स्वयं धर्मदेशना दे सकें।

भगवान तथा उनके साठ अरहंत शिष्यों द्वारा सद्धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए उठाया गया यह पहला कदम था।

भगवान के उपरोक्त आदेश का एक-एक शब्द गंभीर है, कल्याणकारी है। फिरभी दो-तीन शब्द विशेषरूप से ध्यान देने योग्य हैं –

धर्म

यह ध्यान देने योग्य है कि भगवान ने इस प्रारंभिक आदेश से लेकर अपने संबोधिमय जीवन के ४५ वर्षों में धर्म को कहीं भी **'बौद्धधर्म'** नहीं कहा। यह सही है कि पालि वर्णमाला में 'औ' स्वर है ही नहीं तब बौद्ध कैसे कहते? परंतु यह भी सही है कि वर्णमाला में 'ओ' स्वर होने के कारण जहां कहीं 'बोद्ध' शब्द का प्रयोग हुआ है वहां भी संप्रदाय के अर्थ में **'बोद्धधर्म'** नहीं कहा गया। उनके अनुयायियों के लिए भी 'बोद्ध' जैसे किसी संप्रदायवाचक शब्द का प्रयोग नहीं किया गया। अतः स्पष्ट है कि भगवान की मूल शिक्षा संप्रदायवादी नहीं थी। भगवान 'बौद्धधर्म' के नाम से कोई संप्रदाय स्थापित नहीं करना चाहते थे क्योंकि वे स्वयं संप्रदायवाद के विरोधी

थे और अपने अनुयायियों को 'बौद्ध' कहा जाना उचित नहीं समझते थे। इसीलिए उन्होंने अपनी शिक्षा को **'धर्म'** कहा अथवा कहीं-कहीं **'सद्धर्म'** कहा, यानी, सत्य वह जो निसर्ग के सार्वजनीन नियमों पर आधारित है। इसी प्रकार उन्होंने धर्मपालकों को धम्मी (धर्मी), धम्मिको (धार्मिक), धम्मचारी, धम्मविहारी कहा जो कि सांप्रदायिक शब्द नहीं हैं, बल्कि सार्वजनीन हैं। सार्वजनीन धर्म का पालन सभी कर सकते हैं, धार्मिक सभी बन सकते हैं।

सव्यंजन और सार्थक

सव्यंजन माने धर्म को ऐसे शब्दों से व्यंजित किया जाय जिसे कि लोग स्पष्टरूप से समझ सकें। सार्थक इस माने में कि उसका प्रतिपादन करके अपने जीवन का अर्थ सार्थक कर लें। धर्म केवल व्यंजन तक ही सीमित हो तो **परियत्ति** कहलाता है। इससे धर्म को बुद्धि के स्तर पर समझना सरल है। परंतु यदि धर्म परियत्ति तक ही सीमित रह जाय तो उसका यथार्थ लाभ नहीं मिलता। परियत्ति में बताए हुए मार्ग का कदम-कदम प्रतिपादन करने पर ही धर्म सार्थक होता है। इसी को **पटिपत्ति (प्रतिपत्ति)** यानी **प्रतिपादन** कहा गया।

उस समय के ही नहीं, बल्कि भविष्य में भी बुद्ध शासन के जो धर्मदूत हों, उन्हें **परियत्ति** और **प्रतिपत्ति** दोनों में निपुण होना आवश्यक है। परियत्ति के लिए तो तिपिटक का संपूर्ण साहित्य उपलब्ध है और प्रतिपत्ति के लिए पंचशील पालन करते हुए सम्यक समाधि और प्रज्ञा का अभ्यास करना आवश्यक है। इसके लिए उन्होंने सांस के आवागमन पर ध्यान करने और इससे सम्यक समाधि को पुष्ट करने का प्रशिक्षण दिया। प्रज्ञा को पुष्ट करने के लिए शरीर की संवेदनाओं के अनित्य स्वभाव को स्वानुभव द्वारा जानने और उनके प्रति तटस्थभाव रखने का प्रशिक्षण दिया। जो धर्मदूत प्रतिपत्ति में पुष्ट हैं उन्हें परियत्ति में भी पकना आवश्यक है।

प्रज्ञा

प्रज्ञा का अर्थ है प्रत्यक्ष ज्ञान, यानी अपनी अनुभूति से प्राप्त हुआ ज्ञान, न कि परोक्ष ज्ञान, यानी सुन कर या पढ़ कर समझा हुआ ज्ञान। विपश्यना द्वारा स्वानुभूति से जो ज्ञान जागता है वही प्रत्यक्ष ज्ञान है, यानी वही सही माने में प्रज्ञा है। यही आगे जाकर पटिवेधन प्रज्ञा बन जाती है, जो कि वर्तमान और अतीत काल से मानस की गहराइयों में संगृहीत विकारों की जड़ों का छेदन-भेदन करके, उनका निष्कासन करती है। जैसे-जैसे यह प्रज्ञा पुष्ट होती जाती है, वैसे-वैसे शील स्वतः पुष्ट होते जाते हैं। क्योंकि भगवान द्वारा सिखायी गयी प्रज्ञा का अभ्यास करने वाला साधक देखता है कि शरीर और वाणी से दुष्कर्म करने के पहले उसे मन में कोई-न-कोई विकार जगाना होता है और विकार जगते ही साधक का मन व्याकुलता से भर जाता है। इस सच्चाई का अनुभव करते-करते साधक बखूबी समझने लगता है कि दुःशील द्वारा औरों की हानि करने के पहले मैं स्वयं अपनी हानि करने लगा। भगवान की यह वाणी उसे स्पष्ट समझ में आने लगती है कि– **पुब्बे हनति अत्तानं, पच्छा हनति सो परे।** (*वसभत्थेरगाथा, १३९*) यानी अन्य किसी की सुख-शांति का हनन करने के पहले व्यक्ति स्वयं अपनी सुख-शांति का हनन करता है। अपने आपको व्याकुल बनाता है। मन में विकार जगाते ही निसर्ग के नियमों के अनुसार शरीर पर बहुत अप्रिय और दुःखद संवेदनाएं प्रकट होने लगती हैं। कोई साधक साक्षीभाव से, बिना प्रतिक्रिया किये इनका स्वानुभव करता रहे तो चिरसंचित विकारों की जड़ों का उन्मूलन होने लगता है। यदि साक्षीभाव न रख कर भोक्ताभाव जगाता है तो उन्हीं विकारों का संवर्धन होने लगता है। तटस्थ रहे तो दुष्कर्मों से संबंधित विकारों का निष्कासन हो जाय, दुष्कर्म होने बंद हो जायँ और शील स्वतः पुष्ट हो जाय।

भगवान के द्वारा आर्य अष्टांगिक मार्ग की विपश्यना साधना साधकों को विकारों से मुक्ति दिलाती है और अंततः जन्म-मरण से पूर्णतया मुक्त होने की ओर ले जाती है। इसीलिए यह परंपरा अपने शुद्ध रूप में कायम रखी गयी और भारत में जगह-जगह विस्तृत होकर लोक-कल्याण करती रही। आगे जाकर सम्राट अशोक के शासन काल में भदंत मोग्गलिपुत्त तिस्स ने भारत में ही नहीं, बल्कि पड़ोसी देशों में भी इसे भेज कर वहां के निवासियों का कल्याण किया। इसका शुद्ध रूप जो बर्मा में संभाल कर सुरक्षित रखा गया, वह अब २००० वर्षों बाद भारत आया है और भारत के लोगों के लिए कल्याणकारी साबित हो रहा है। यहां से विश्व के अनेक दशों में भी फैल रहा है और वहां के लोगों का भी कल्याण कर रहा है।

जबकि बुद्ध के प्रथम शासन के २५०० वर्ष पूरे हुए और २५०० वर्ष के द्वितीय शासन का आरंभ हुआ, तब एक ऐसा सुखद संयोग जागा –

१. बर्मा में इस मान्यता की प्रसिद्धि चली आ रही थी कि द्वितीय शासन आरंभ होने पर वहां जो बुद्ध धर्म शुद्ध रूप में सुरक्षित रखा गया, वह भारत ले जाया जायगा और वहां से सारे विश्व में फैलेगा।

२. परम पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन की यह प्रबल धर्मकामना थी कि सम्राट अशोक के समय भारत ने शुद्ध धर्मरूपी जो अनमोल रत्न बर्मा को प्रदान किया, इससे बर्मा भारत का चिर ऋणी हुआ। अब समय आ गया है कि मुझे बर्मा को इस ऋण से उऋण कराना है। भारत का अनमोल रत्न भारत तक पहुँचाना है।

३. भारतरत्न बाबासाहेब अंबेडकर इसे बखूबी समझते थे कि भारत से भेजा हुआ धर्मरत्न बर्मा में कायम है। भारत उसे खो बैठा है। अतः उन्होंने अत्यंत विनम्र और भावावेशपूर्ण शब्दों में बर्मा की बुद्ध शासन समिति के एक अधिवेशन में प्रसिद्ध भिक्षुओं और धर्मनेताओं को संबोधित करते हुए निवेदन किया कि वे बुद्ध का धर्मरत्न भारत को भेजें, जहां इसकी नितांत आवश्यकता है। वहां के लोग बुद्ध को ईश्वर का अवतार मानते हैं इसलिए बुद्ध के धर्म को स्वीकार करने में उन्हें कोई हिचकिचाहट नहीं होगी। बुद्ध का धर्म बर्मा से भेजने के लिए कोई पासपोर्ट की और भारत में प्रवेश के लिए कोई वीसा की आवश्यकता नहीं है। बाबासाहेब की इस अपील ने सुनने वालों को अत्यंत प्रभावित किया।

बुद्ध धर्म के द्वितीय शासन के आरंभ में उपरोक्त तीनों बातों का सुखद संयोग हुआ और बर्मा के प्रसिद्ध धर्माचार्य सयाजी ऊ बा खिन ने अपने एक गृहस्थ नागरिक शिष्य को पूर्णतया प्रशिक्षित करके धर्मदूत के रूप में भारत भेजा। पूर्व मान्यता के अनुसार भारत में अनेक लोगों ने इस धर्मरत्न को सहर्ष स्वीकार किया, आज भी कर रहे हैं और उनका कल्याण हो रहा है। तदनंतर यह धर्मरत्न भारत से सारे विश्व में पहुँच कर वहां के लोगों का भी कल्याण कर रहा है। क्योंकि धर्म किसी देश विशेष, काल विशेष अथवा संप्रदाय विशेष के लिए नहीं है बल्कि सर्वत्र, सब समय, सब के लिए कल्याणकारी है। इसीलिए विश्व के सभी संप्रदायों के लोग इसमें सम्मिलित होकर लाभान्वित हो रहे हैं। विपश्यना के वर्तमान आचार्य इस मूल शिक्षा में कोई रद्दोबदल करने की भूल न करें। धर्म परिशुद्ध और परिपूर्ण रहेगा तब यह लोगों का वैसे ही कल्याण करेगा जैसे कि पूर्वकाल में करता रहा।

भगवान के बताए हुए इस परिशुद्ध और परिपूर्ण सार्वजनीन, सार्वकालिक, सार्वदेशिक धर्म का अधिक से अधिक प्रसारण हो और अधिक से अधिक मनुष्य इसे धारण कर अपना मंगल साध लें! धर्म के नाम पर कहीं कोई संप्रदाय का गठन न हो जाय, इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है। सत्य धर्म के प्रसारण का यही उद्देश्य होना चाहिए। इस प्रसारण से अधिक से अधिक लोगों का मंगल हो! कल्याण हो! सबकी स्वस्ति-मुक्ति हो!

कल्याणमित्र,
सत्यनारायण गोयन्का

भव्य विश्व शांति स्तूप की आवश्यकताएं

पगोडा-परिसर की सुंदरता बढ़ाने और उसे सुरक्षित रखने के लिए निम्न उत्तरदायित्वों को कुशलतापूर्वक निभाने हेतु योग्य व्यक्तियों की शीघ्र आवश्यकता है। कृपया अपने बारे में विस्तृत जानकारी व अनुभव का विवरण देते हुए संपर्क करें–

सुविधाएं – विश्व की अमूल्य धरोहर को सुव्यवस्थित और सुरक्षित रखने का सुअवसर, सम्यक आजीविका के साथ बुद्धधातु के सान्निध्य में ध्यान, भोजन तथा आवश्यक होने पर निवास आदि की सुविधा रहेगी।

सहायक व्यवस्थापक, रखरखाव आदि में कुशल इलेक्ट्रिकल या मेकैनिकल इंजीनियर – ६ से ८ वर्ष का अनुभवी हो। **परचेज ऑफिसर** – किसी बड़ी कंपनी में विषय का पांच वर्ष का अनुभव आवश्यक। **इलेक्ट्रीशियन** जो इलेक्ट्रानिक्स गुड्स को भी संभाल सके। आई.टी.आई - सी के लाइसेंस सहित १०-१२ वर्ष का अनुभवी। **सिविल सुपरवाइजर**, **हाउसकीपिंग, फिटर्स, प्लंबर्स, जूनियर आर्कीटेक्ट** कम-से-कम १० से १५ वर्ष के अनुभवी तथा **टूरिस्ट गाइड** ३-५ वर्ष के अनुभवी व्यक्ति ही आवेदन करें। **संपर्क –** व्यवस्थापक, ग्लोबल विपश्यना फाउंडेशन, गोराई खाडी, एस्सेलवर्ड के बगल, बोरीवली (प.), मुंबई- ४०००९१. फोन- २८४५२१११, २८४५१२०४.
Email: globalpagoda@hotmail.com; website: *www.globalpagoda.org*

गांधीधाम में पुराने साधकों की एक दिवसीय कार्यशाला

दि. १९ सितंबर, दिन रविवार को गांधीधाम में प्रात ८-३० बजे से सायं ५ बजे तक एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया है। आस-पास के क्षेत्रों के साधक पधार कर इसका लाभ अवश्य उठाएं। **स्थान –** कच्छी वीसा ओसवाल जैन अतिथिगृह, सत्कार होटल के पास, रेल्वे स्टेशन के सामने, गांधीधाम(कच्छ).

बुकिंग संपर्क – श्री किशोरभाई रणवाला- ०२८३६-२३३०५४, ९४२७२०९००१. श्री हितेश रणवाला – ९४२६२१४५३१.

विपश्यी साधकों के लिए तीर्थ यात्रा

भारतीय रेलवे की पर्यटन शाखा (आई. आर. सी. टी. सी.) ने २००७ से **महापरिनिर्वाण एक्सप्रेस** नामक एक विशेष वातानुकूलित रेलगाड़ी चलायी है जो बुद्ध से संबंधित पवित्र स्थलों -- **लुम्बिनी, बोधगया, सारनाथ, श्रावस्ती, राजगीर तथा कुशीनगर** आदि स्थानों की सितंबर से मार्च तक माह में दो बार तीर्थ यात्रा कराती है। विस्तृत जानकारी और टिकट बुकिंग के लिए संपर्क करें :-- visit website: www.railtourismindia.com/buddha

ग्लोबल विपस्सना फाउंडेशन ने विपश्यी साधकों के लाभार्थ आई. आर. सी. टी. सी. से १५% की विशेष छूट का प्रबंध किया है। आई. आर. सी. टी. सी. और ग्लोबल विपस्सना फाउंडेशन ने इसके अतिरिक्त इस बात पर भी सहमति जतायी है कि विपश्यी साधकों के लिए दो बार सामूहिक साधना का भी प्रबंध होगा। लेकिन यह तभी संभव हो पायगा जब कि एक ट्रेन पर कम से कम दस विपश्यी साधक हों। पहली सामूहिक साधना बोधगया के बोधिवृक्ष के नीचे और दूसरी कुशीनगर में आयोजित की जायगी। सामूहिक साधना का समय मंदिर बंद हो जाने के बाद होगा, ताकि आने-जाने वाले यात्रियों से शांति-भंग न हो और साधकों को साधना के लिए शांत वातावरण मिले। यह भी तभी संभव हो पायगा जब कि उस दिन मंदिर परिसर में कोई अन्य कार्यक्रम न हो।

विस्तृत जानकारी : श्री हेमंत शर्मा +९१-९७१७६४४७९८ या श्री इजहार आलम ९७१७६३५९१२. आई. आर. सी. टी. सी., ग्राउंड फ्लोर, एस.टी.सी. बिल्डिंग १, टॉलस्टोय मार्ग, नई दिल्ली ११०००१. फोन ०११-२३७०-११००, या २३७०-११०१. इमेल: arunsrivastava@irctc.com; or buddhisttrain@irctc.com

इंटरनेट पर विपश्यना-संबंधी हिंदी वेबसाइट एवं पत्रिका : मोबाइल पर

प्रसन्नता का विषय है कि **इंटरनेट पर** विपश्यना-संबंधी सभी प्रकार की जानकारी निम्न वेबसाइट पर हिंदी में भी उपलब्ध है और इसी प्रकार **"स्मार्ट"** फोन रखने वाले, सारी जानकारियां अपने मोबाइल पर भी देख सकते हैं। इस प्रकार क्रमशः देखें– website: www.hindi.dhamma.org; www.mobile.dhamma.org

---

यूटीवी-एक्सन पर पूज्य गुरुजी के प्रवचन

हर सप्ताह सोमवार से शनिवार, प्रातःकाल ४-४५ से ५-४५ तक पूज्य गुरुदेव के प्रवचनों की क्रमिक शृंखला प्रसारित की जाती है। साधक इसका लाभ उठा सकते हैं।

बृहन्मुंबई महानगर पालिका के स्कूलों में बच्चों के शिविर

बृहन्मुंबई महानगर पालिका के स्कूलों में आगामी दसवीं की परीक्षा देने वाले लगभग दस हजार बच्चों को धर्म सिखाने अर्थात आनापान के शिविर लगाने के लिए पालिका की ओर से निवेदन आया है। विगत में लगे बाल-शिविरों से बच्चों के व्यवहार तथा परीक्षाफल में बहुत सुधार हुआ है। अतः इस चुनौती को स्वीकार करते हुए बड़ी संख्या में बालशिविर शिक्षक, अनुभवी धर्मसेवक तथा अनुभवी काउंसलर्स आदि की शीघ्र आवश्यकता है। जुलाई के प्रथम सप्ताह से ही यह कार्य आरंभ हो चुका है। बच्चों के साथ काम करने में रुचिवान, तीन शिविर किये साधक ही सेवा के लिए आयें। सेवा के पूर्व समुचित प्रशिक्षण दिया जायगा। अधिक जानकारी तथा सेवा के लिए **संपर्क करें –** श्री अनिल मेहता – २५००६०४३ २५००८८६८.

धर्मसेवकों को समुचित प्रशिक्षण की "कार्यशाला" दिसंबर ३ व ४, २०१०

धम्मगिरि पर आयोजित इस कार्यशाला में सम्मिलित होने के लिए कृपया अपना नामांकन अवश्य करायें। इसके लिए – पत्र, फैक्स या ईमेल से अपना पूरा नाम, पूरा पता, उम्र, फोन नं० मोबाइल या घर का, कितने शिविर किये, कितने शिविरों में सेवा दी तथा अन्य कोई विवरण अपने बारे में देना चाहें तो सब कुछ साफ-साफ लिखें।

ग्लोबल विपश्यना पगोडा के शेष कार्य

विपश्यना के विशाल भव्य स्तूप का निर्माण विपश्यी साधकों और श्रद्धालुओं के दान से ही संपन्न हुआ। अब स्तूप के सौंदर्यीकरण और लैंडस्केपिंग का काम पूरा करने के लिए बड़ा खर्च शेष है। इसमें सहयोग देकर जो भी पुण्य अर्जित करना चाहें, वे इस सुअवसर का लाभ उठा सकते हैं। **संपर्कः "ग्लोबल विपस्सना फाउंडेशन",** द्वारा- खीमजी कुँवरजी एंड कं., ५२, बांबे म्युचुवल बिल्डिंग, सर पी. एम. रोड, मुंबई- ४००००१. (फोन- ०२२- २२६६२५५०, ईमेल- shivji@khimjikunverji.com

---

पगोडा में पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में एक-दिवसीय शिविर

शरदपूर्णिमा पर **२३ अक्टूबर, शनिवार** को (२२ अक्टूबर, शुक्रवार के बदले)

सयाजी ऊ बा खिन दिवस १६ जनवरी, रविवार (१९ जन. बुधवार के बदले)

समयः प्रातः ११ बजे से अपराह्न ४ बजे तक, **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** के बड़े धम्मकक्ष (डोम) में हजारों साधकों और **पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य** में

विपश्यना पत्र के स्वामित्व आदि का विवरण

समाचार पत्र का नाम : **"विपश्यना"**
भाषा : **हिंदी**
प्रकाशन का नियत काल : **मासिक** (प्रत्येक पूर्णिमा)
प्रकाशन का स्थान : विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३.
मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक का नाम : राम प्रताप यादव
राष्ट्रीयता : भारतीय
मुद्रण का स्थान : अक्षरचित्र, बी-६९, सातपुर, नाशिक-७.

पत्रिका के मालिक का नाम : **विपश्यना विशोधन विन्यास,**
(रजि. मुख्य कार्यालय):
ग्रीन हाऊस, २ रा माला,
ग्रीन स्ट्रीट, फोर्ट, मुंबई-४०००२३.

मैं, राम प्रताप यादव एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि ऊपर दिया गया विवरण मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास के अनुसार सत्य है।

राम प्रताप यादव,
मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक
दि. ९-८-२०१०.

Registered No. NSK/46/2009-2011

WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2009-2011

एक-दिवसीय शिविर का लाभ उठाएं। कृपया ध्यान दें कि इस विशाल शिविर की व्यवस्था सुचारुरूप से हो और आपको किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसलिए **बिना बुकिंग कराये** न आएं। **बुकिंग संपर्क** : **मोबा.** (१) 0 **98928 55692**, **(2)** 0 **98928 55945**, **फोन नं.:** 022- **2845-1182, 2845-1170**. (**फोन बुकिंग समय :** प्रातः ११ से सायं ५ तक, प्रतिदिन)

ईमेल Registration: global.oneday@gmail.com;

Online booking: www.vridhamma.org

धर्मसेवक-सेविकाओं की आवश्यकता है

धम्मपत्तन विपश्यना केंद्र, मुंबई हेतु **पुरुष** एवं **महिला** धर्मसेवक-सेविकाओं तथा **पुरुष** मैनेजर की भी आवश्यकता है। अपने बारे में विवरण सहित **संपर्क** करें– सुश्री प्रीति डेढिया, फोन- मो. ९२२२३३४५२४(१२ बजे से सायं ६). ईमेल-- priti.dedhia@gmail.com

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

क्षेत्रीय आचार्य

1. Mr. Bill Hart, *To serve Canada*
2. Daw Nini Shwe (Sushila), Yangon, *To serve Myanmar*

३-४. श्री रूप एवं श्रीमती बीना ज्योति, काठमांडू, *नेपाल की सेवा*

नये उत्तरदायित्व

आचार्य

१-२. श्री नारायणदास एवं श्रीमती मीना सापरिया, कनाडा, *धर्म की सेवा*

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्री हरिदास मेश्राम, बालाघाट
२. श्री अशोक कुमार खोब्रागडे, बालाघाट

नव नियुक्तियां

१-२. श्री गोविंद एवं श्रीमती बीना अग्रवाल, मुंबई
३. श्री दिनेशचंद्र देशमुख, नागपुर
4. Mr. Itamar Sofer & Mrs. Jung Im Jung, *Korea*
5. Mr. Kang Young-uk, *Korea*
6. Dr. (Ms.) Gosia Myc, *Poland*
7. Mr. Eric Garcia, *Spain*
8. Ms. Barbara Huffsmith, *USA*se 8

बालशिविर शिक्षक

१. श्री प्रवीण एवं श्रीमती रेखा कारिया, अंजार
२. श्रीमती पुष्पा मोमाया, वाडा
३. श्रीमती ज्योति चांदवानी, भुज
४. श्री प्रवीण झवेरी, भुज
५. श्री प्रवीण सार्दुल, मुंबई
6. Mrs. Duangporn Kungwanklai, *Thailand*
7. Mr. Sakachat Tunprawat, *Thailand*

दोहे धर्म के

नमन करूं मैं बुद्ध को, कैसे करुणागार!
दुःख मिटावन पथ दिया, सुखी करन संसार॥

नमस्कार उनको करूं, जो सम्यक सम्बुद्ध।
जो भगवत अरहंत जो, जो पावन परिशुद्ध॥

याद करूं जब बुद्ध की, करुणा अमित अपार।
तन मन पुलकित हो उठे, चित छाये आभार॥

यही बुद्ध की वंदना, विनय नमन आभार।
जागे बोध अनित्य का, होवें दूर विकार॥

चित्त निपट निर्मल रहे, रहूं पाप से दूर।
यही बुद्ध की वंदना, रहे धरम भरपूर॥

यही बुद्ध की वंदना, पूजन और प्रणाम।
शुद्ध धरम धारण करूं, मन होवे निष्काम॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

नमन करूं मैं बुद्ध नै, काया सीस नवाय।
जाणूं काया फेन सी, बण बण बिगड़त जाय॥

गुण गाऊं मैं बुद्ध रा, मुक्त कंट।
परम धरम बांट्यो इस्यो, हुयो जगत उपकार॥

गावां जद-जद बुद्धजी, थारै गुण रा गान।
पावां पावन प्रेरणा, भोगां सांति निधान॥

स्रद्धा जागी बुद्ध पर, करयो धरम अभ्यास।
जनम-जनम री बुझ गयी, अंतरतम री प्यास॥

उळझण ही उळझण बढी, मिल्यो न दुख रो अंत।
मुक्ति मोक्छ निरवाण रो, पंथ दियो भगवंत।

जदि संबुध ना ढूंढता, सांच धरम रो पंथ।
बढतो जातो भटकतां, भवभय दुक्ख अनंत॥

एक साधक
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422007. **बुद्धवर्ष** 2553, **स्रावण पूर्णिमा,** 24 **अगस्त, 2010**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/46/2009-2011**

Licensed to post w**ithout Prepayment of postage** -- WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2009-2011
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712, 243238.
फैक्स : (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org